# संवाद

शिक्षा केवल ज्ञान का संप्रेषण नहीं है, बल्कि यह संवेदनाओं के विस्तार का माध्यम भी है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में मातृभाषा की भूमिका केवल भाषायी अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बच्चों के भावनात्मक, नैतिक एवं सामाजिक विकास की आधारशिला भी है। विद्यालयी जीवन में भाषा न केवल विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है, बल्कि इसके माध्यम से संवेदनशीलता की अनुभूति तथा पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास भी होता है। प्रारंभिक स्तर पर बच्चों के सीखने के कौशलों और उनसे प्राप्त प्रतिफलों को समझना, शिक्षण की गुणवत्ता को सुदृढ़ करने हेतु अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल शिक्षकों को बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण की योजना बनाने में सहायक होता है, बल्कि उनके समग्र विकास की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होता है। इसी प्रकार, समानुभूति और सहभागिता दो ऐसे मूल्य हैं, जो बच्चों को सामाजिक और भावनात्मक रूप से सशक्त बनाते हैं। समानुभूति बच्चों को दूसरों की भावनाओं को समझने और उनका आदर करने की क्षमता प्रदान करती है, वहीं सहभागिता उन्हें आत्मविश्वास से भरती है और निर्णय प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करती है। प्रातःकालीन सभा विद्यालय जीवन का एक अमूल्य पक्ष है। यह केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की एक सशक्त प्रक्रिया है। इसके माध्यम से बच्चों में अनुशासन, आत्मविश्वास, एकता और नैतिक मूल्यों का विकास होता है। एक संतुलित और सफल जीवन के लिए मानसिक स्वास्थ्य अत्यंत आवश्यक है। यह व्यक्ति को निर्णय लेने, संबंध निभाने, चुनौतियों से निपटने और आत्मविकास की दिशा में सक्षम बनाता है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा शुरू की गई 'मनोदर्पण' पहल विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों के मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक भलाई को सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। कोविड-19 महामारी के दौरान आरंभ हुई यह पहल आज भी विद्यार्थियों की मानसिक स्थिरता को सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभा रही है।

शिक्षा में प्रौद्योगिकी का समावेश जटिल अवधारणाओं को सरल और रोचक बनाता है। विशेषकर ऑगमेंटेड रियलिटी (ए.आर.) जैसे नवाचारों ने पाठ्यवस्तु को देखने, महसूस करने और गहराई से समझने

की दिशा में एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। इससे न केवल बच्चों की समझ बेहतर होती है, बल्कि सीखने की प्रक्रिया भी अधिक प्रभावी बनती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का क्रियान्वयन विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक-शिक्षा पर भी गहरा प्रभाव डालती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित है कि शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है, जो गहराई से भारतीय हों, देश के प्रति गर्व और राष्ट्रवाद से ओतप्रोत हों और वैश्विक स्तर पर सहयोगी भी बन सकें।

'वीणा' पाठ्यपुस्तक इस दिशा में एक प्रभावशाली साधन के रूप में सामने आती है। इसमें शामिल रोचक कहानियाँ, कविताएँ और सजीव चित्र भाषा सीखने की प्रक्रिया को सहज, सुगम और आनंददायी बनाते हैं। यह पुस्तक संवाद, वर्ण, शब्द और वाक्य संरचना का स्वाभाविक अभ्यास कराकर विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति की दक्षता को विकसित करती है। साथ ही इसमें, प्रकृति, ऋतु एवं पशु-पक्षियों से संबंधित पाठ नन्हे विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जिज्ञासा और जागरूकता को भी प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार, यह पाठ्यपुस्तक भाषा विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय संवेदनशीलता को भी समान रूप से पोषित करती है और भारतीय ज्ञान परंपरा का भी विकास होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा विकसित करना एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है, जो न केवल हमारे समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को पुनः जाग्रत करता है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को एक गहन आत्मबोध और वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

आज का विद्यार्थी केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रह सकता। उसे पर्यावरणीय चेतना और सतत विकास के सिद्धांतों से अवगत कराना आवश्यक है। जल, वायु, मृदा जैसे संसाधनों के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना विकसित करना अनिवार्य है, ताकि वह भावी पीढ़ी के लिए एक उत्तरदायी नागरिक बन सके। जब शिक्षा में मातृभाषा, भावनात्मक संवेदनशीलता, पर्यावरणीय चेतना, तकनीकी नवाचार और मानसिक स्वास्थ्य का समन्वय होता है, तभी यह सतत विकास का वास्तविक मार्ग प्रशस्त करती है। ऐसी शिक्षा ही बालक को एक सजग, सशक्त और उत्तरदायी नागरिक बनने के लिए तैयार करती है।

इस अंक में लेख (13), विशेष (1), कविता (1) बालमन (1) और विशेष के अंतर्गत बाँसुरी-1 कक्षा 3 के लिए कला की 'पाठ्यपुस्तक के बारे में' शामिल किया गया है। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। यदि पत्रिका के संबंध में आपका कोई सुझाव हो तो हमें अवश्य भेजें। हम अपने आगामी अंक में उन्हें शामिल करने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

*अकादमिक संपादक*